नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

खानदेश के जनपदीय लोकवाद्य परंपरा और वर्तमान

श्रीपाद प्रदीप शिरवलकर

ललित कला केंद्र (गुरुकुल), पुणे विद्यापीठ, पुणे

सार-संक्षेप

लोकसंगीत एक पारंपरिक और मौखिक संगीत की विशाल परंपरा है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक लोकसंगीत का संवहन होता है। आदिम संगीत लोकसंगीत की जननी है। आदिम संगीत आदिवासियों का संगीत है। लोकसंगीत निर्माण के पीछे भौगोलिक सीमाएँ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परंपरा, सांस्कृतिक विविधता, रिती रिवाज, उत्सव इत्यादि घटक कारक है। लोकसंगीत में लोकवादयो का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारत में अलग अलग प्रदेश के लोकवाद्य में विविधता दिखाई देती है। लोकवाद्य यह स्वर और लय वाद्य होते है। लोकवाद्य प्रस्तुती को मनोरंजन तथा आत्मरंजन का एक प्रभावी माध्यम के रूप में देखा जाता है। भारत के महाराष्ट्र राज्य कि लोक परंपरा विशाल और वैविध्यपूर्ण है। महारष्ट् राज्य का उत्तरी भूभाग खानदेश है। जलगाव, धुले, और नंदुरबार यह तीन जिलों का प्रदेश खानदेश है। खानदेश का लोकसंगीत सामाजिक एकता का प्रतिक है। खानदेश (महाराष्ट्र) परिक्षेत्र की लोकवाद्य परंपरा और वर्तमान स्थिति इसका अध्यन इस शोध निबंध के माध्यम से करना चाहता हूँ।

मुख्य शब्द – लोकसंगीत, खानदेश, लोकवाद्य, बनावट, परंपरा, संबळ, तारपा. किंगरी.

शोध-पत्र

भूमिका

भारतीय संस्कृति बहुआयामी है और विविधता में एकता का प्रतीक है इसलिए हर प्रांत में लोकसाहित्य की विविधता और लोगों की अलग-अलग संस्कृति को देखा जाता है। "लोकसंगीत लोकसंस्कृति के प्रवाह का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। लोकसंगीत एक राष्ट्रीय आविष्कार है। यह देश का सांस्कृतीक रक्षक है"। (रानडे, 30) संगीत शास्त्र में गायन, वादन और नृत्य यह तीन कलाओ को मिलाकर संगीत कहा गया है। विद्या की देवता सरस्वती माता को वीणा, पुस्तक धारिणी कहा गया है। विणा तंत्र का निर्देश है और पुस्तक शास्त्र का निर्देश है। प्राचीन काल से हमे वाद्ययो का और तालोका उल्लेख भरत के नाट्यशास्त्र और संगीतरत्नाकर इस ग्रंथ में प्राप्त होता है। जैसे भगवान शिवजी के हाथ में डमरू यह अवनद्ध वाद्य है। सरस्वती देवी और नारद के हात में वीणा यह तंतु वाद्य। भगवान श्रीकृष्ण के हाथ में बासुरी यह सूशिर वाद्ययो का उल्लेख प्राप्त होता है। प्राचीन काल से मानव निर्मित संगीत आविष्कार देशी संगीत है। लोक समुदाय द्वारा लोको के माध्यम से निबद्ध संगीत को लोकसंगीत कहते है। प्राचीन काल से मानव अपनी भावनावो को लोकसंगीत के माध्यम से व्यक्त करता है। विवाह, सण, उत्सव, जन्म, मृत्यू इत्यादी समय पर विशिष्ट लोकाविष्कार लोकसमुदाय द्वारा प्रकट किये जाते है। "लोकसंगीत मानव कि सभ्यता संस्कृती पर प्रकाश डालते है। लोक संगीत का कोई एक जनक नही होता तथा लोकसंगीत से सभी रसो की उत्पत्ती संभव है"।(म्हसकर, 70). लोकसंगीत का उद्देश मनोरंजन, आत्मरंजन, भावउत्पत्ति और आनंद प्राप्ती है। लोकसंगीत के मुख्य तत्व स्वर, भाषा, लय, ताल है।

संशोधन समस्या

लोकसंगीत और लोकवाद्य इस विषय पर अनेक संशोधन और शोध निबंध प्राप्त होते है। लेकिन खानदेश (महाराष्ट्र) परिक्षेत्र के लोकसंगीत और लोकवाद्य की परंपरा और वर्तमान स्थिति पर कोई संशोधन प्राप्त नही होता। महाराष्ट्र के खानदेश परिक्षेत्र के लोकसंगीत में व्यापक परिवर्तन आ रहे है। परंपरागत लोकवाद्य जो सामाजिक और सांस्कृतिक संवाद का एक प्रमुख माध्यम रहे है। वर्तमान काल में आधुनिकता, शहरीकरण, और युवा पिढी की रुचियो के बदलते स्वरूप का प्रभाव लोकसंगीत और लोकवाद्य परंपरा के उपर दीखाई दे रहा है। खानदेश के ग्रामीण समाज में लोकवाद्य परंपरा स्थिती क्या है? वर्तमान में यह वाद्य सामाजिक समारोह, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक उत्सवों में प्रासंगिक बने हुये है, या उनका अस्तित्व धिरे धिरे समाप्त होता जा रहा है। इस समस्या का विश्लेषण करके हम यह प्रयास कारेगे की खानदेश की लोकवाद्य परंपरा वर्तमान समय में किन-किन संकटो का सामना कर रही है तथा उनके संरक्षण व संवर्धन के लिये क्या संभावित उपाय

आपनाए जा सकते है इसका शोध ले सकते है, इसलिये इस विषय को विशेष महत्त्व प्राप्त होता है।

उद्देश्य

1. खानदेश क्षेत्र की लोकवाद्य परंपरा का विस्तृत अध्ययन करना।
2. लोकवाद्य परंपरा का सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक महत्त्व समझना।
3. वर्तमान समय में खानदेश की लोकवाद्य परंपरा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
4. इस परंपरा के संरक्षण में आने वाली समस्याओ को पहचानना।
5. खानदेशी लोकसंगीत और लोकवाद्य परंपरा का संवर्धन करना और युवा पीढ़ी में रुचि बढ़ाना।

व्यापती

यह शोधनिबंध खानदेश क्षेत्र (महाराष्ट्र राज्य) के लोकवाद्य परंपरा पर केंद्रित है। मुख्य रूप से जलगाव, धुले, और नंदुरबार यह तीन जिलो का प्रदेश खानदेश है। संबळ, तारपा, आदिवासी ढोल, डफ, खंजीरी/ दिमडी, धनगरी ढोल, सुंदरी (शहनाई), नाल, किंगरी इत्यादि पारंपरिक लोकवाद्य का विश्लेषण अपेक्षित है। पारंपरिक लोकवाद्य कि परंपरा, बनावट, स्वरूप, वादन, विधी तथा वर्तमान स्थिती का अध्ययन।

कार्यप्रणाली

1. विश्लेषणात्मक संशोधन,
2. गुणात्मक संशोधन

खानदेशी लोकसंगीत

प्राचीन काल से खानदेश का लोकसंगीत महाराष्ट्र की लोकसंस्कृती का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह संगीत खानदेश की परंपरा, उत्सव, किसान का जीवन, ससामाजिक अनुभव, मानवी जीवन में परिलक्षीत होता है। “खानदेशी लोकसंगीत संगीत सरल और समाज को आकर्षित करता है। खानदेशी लोकसंगीत में आहीरणी, तावडी, मराठी, लेवा बंजारी, भिल्ली, गुजरी इत्यादि बोली भाषाओ का उपयोग होता है”। (पाटील, 15). खानदेश में लोकसंगीत तथा लोकवाद्य की समृद्ध परंपरा है। ओवी, लग्नाची गाणी, कानबाई, गवराई, गुलाबाई, आदिम संगीत, गेर नृत्य, आदिवासी ढोल, टिंगर, तारपा, खानदेशी संबळ, धनगरी ढोल गाणी, वाहिगायन, वाघ्या मुरली, जागरण गोंधळ, वारकरी परंपरा, गवळण, तमाशा, भवानी लोककला इत्यादि लोकसंगीत और लोककला खानदेश परिक्षेत्र में प्राचीन काल से दिखाई देती है।

खानदेशी पारंपरिक लोकवाद्य

खानदेश परिक्षेत्र की लोकवाद्य परंपरा आज भी सामाजिक एवं धर्मिक आयोजनों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। “वाद्य संगीत बजाने के लिये विशेष कुशलता होना आवश्यक होता है, लोकगीत समूह गायन होने से सभी भाग ले सकते है”।(रानडे, 18). खानदेश में संबळ, तारपा, डफ, आदिवासी ढोल, धनगरी ढोल, किंगरी, नाल खंजिरी(दिमडी), सुंदरी (शहनाई) इत्यादि प्रमुख लोकवाद्य है।

1. संबळ

संबळ एक पारंपरिक लोकवाद्य है, जो खास तौर पर महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र में उपयोग किया जाता है। यह वाद्य ग्रामीण जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। प्राचीन समय से खानदेश के लोग समारोह, त्योहार, मेलो, धार्मिक अनुष्ठान, विवाह, रथ उत्सव, सामाजिक उत्सव में संबळ वादन परंपरा का विशेष स्थान रहा है। खानदेश क्षेत्र की सामाजिक परंपराओं में संबळ का उपयोग विशेष रूप से धार्मिक कार्य और लोक कथाओं की प्रस्तुती में होता है। विवाह, कानबाई, पोळा इत्यादि त्योहारो में संबळ और शहनाई का वादन के साथ नृत्य भी किया जाता है। संबळ यह चर्म वाद्य है। दो वादयो को मिलाकर संबळ वाद्य होता है। इस वाद्य को धातू अथवा लकडी से बनाया जाता है और उसके उपर चमडा बैठाया जाता है। बसतानी में बांधकर लकडी की काडी से दोनों हाथों से बाजाया जाता है। संबळ यह वाद्य महाराष्ट्र राज्य में विविध शैलियो से बाजाया जाता है लेकिन खानदेशी संबळ वादन में तिस्र जाती का ज्यादा प्रायोग दीखाई देता है। तिस्र जाती के ठेके और उसमे बंधा हुआ खानदेशी लोकसंगीत का विशेष वैशिष्ट्य है। संबळ यह चर्म वाद्य पोळा, होली, कानबाई, विवाह इत्यादि त्योहार तथा गोंधळ जागरण, पावरी, विवाह कावडी वाहिगायन इत्यादि उत्सव में बाजाया जाता है। पारंपारिक संबळ वादन परंपरा कई कारणो से बदलती जा रही है।

2. तारपा

तारपा यह पारंपरिक लोकवाद्य है, जो विशेषतः महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र में प्रचलित है। यह वाद्य खानदेश क्षेत्र की समृद्ध लोकसंगीत परंपरा का अमूल्य हिस्सा है। यह न केवळ संगीत वाद्य है, बल्की ग्रामीण आदिवासी समाज के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। खानदेश क्षेत्र की लोकसंगीत परंपरा में तारपा सदीयो से उपयोग में आया है। तारपा का उपयोग मुख्यतः नंदुरबार, सातपुडा क्षेत्र के आदिवासी समाज के धार्मिक अनुष्ठान, उत्सव, विवाह, पोळा, होली, समारोह इत्यादि में किया जाता है। तारपा यह सुषिर वाद्य है। तारपा बनाने के लिये उत्तम किस्म का बांस उपयोग में लिया जाता है। एक छोटी धातू की पट्टी या बांस की नली का उपयोग किया जाता है, यह हिस्सा वादक द्वारा फुंक मारने के लिये उपयोग में आता है।

3. डफ

डफ यह पारंपारिक लोकवाद्य है, यह चर्मवाद्य श्रेणी में आता है। खानदेश में विशिष्ठ सण, उत्सव, जत्रा, ग्रामदेवता उत्सव, पोळा, गणपती उत्सव, होली इत्यादि के समय डफ वादन की परंपरा दीखाई देती है। यह परंपरा पिढी दर पिढी चलती आ रही है। गोल लकडी एवम धातू की गोलाकार पट्टी के उपर चर्म मढाया जाता है। लकडि के एक बडी और एक छोटी काडी से डफ वादन किया जाता है। "पोवाडा, वाहिगायन इन कला प्रकारो में डफ और झांज यह वाद्य बजाये जाते है, डफ लय वाद्य है"।(म्हसकर, ९३). पश्चिम महाराष्ट्र का हलगी वाद्य डफ का ही रूप है। खानदेशी लोक कलावंत नये प्रयोग कर, डफ वादन को नया आयाम दे रहे है। वर्तमान काल में डफ की बनावट में सकारात्मक परिवर्तन आये है।

4. आदिवासी ढोल परंपरा

आदिवासी ढोल एक पारंपरिक लोकवाद्य है। जो विशेष रूप से महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र में आदिवासी समुदायो द्वारा उपयोग किया जाता है। यह ढोल खास शिसम लकडी और चमडे से बना होता है। आकार में गोल, बडा, वजनदार होता है तथा हात तथा लकडी से बाजाय जाता है। 'आदिवासी समुदाय आपने पारंपरिक लोकगीत गाते समय ढोल के साथ ताल मिलाकर नृत्य भी करते है। यह उत्साह और ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है"।(पावरा, ३१). आदिवास त्योहार जैसे पोळा, ग्राम देवता के पूजन, होली, शिगमा, डोंगर देव उत्सव, भिलवाड मेला इत्यादि में आदिवासी ढोल का वादन किया जाता है। सामूहिक ढोल बजाकर सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान व्यक्त कि जाती है। आदिवासी समाज में ढोल बजाना केवल मनोरंजन नही है, ब्लकी सामाजिक संवाद और परंपरा का हिस्सा भी है।

5. धनगरी ढोल

खानदेश क्षेत्र में धनगर समुदाय द्वारा इस पारंपारिक वाद्य का उपयोग किया जाता है। यह ढोल का उपयोग पारंपरिक लोकगीत गायन में मुख्य लय और ताल वादन के लिये किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में पशू पालन करते समय यह ढोल बाजाया जाता है। यह ढोल आकार में आदिवासी ढोल की तुलना से छोटा और हलका होता है, तथा चमडे से

मढाया जाता है। ग्राम देवता की पूजा, उत्सव, विशिष्ट त्योहार इत्यादि में धनगरी ढोल वादन किया जाता है। विभिन्न परिवार एक साथ वादन करते है। जिससे सामाजिक एकता का संदेश मिलता है।

6. किंगरी

यह एक पारंपरिक लोकवाद्य है, जो विशेष रूप से महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र में प्रचलित है। किंगरी यह तंतु वाद्य है, जो राजस्थानी रावणहत्ता लोकवाद्य यंत्र से मिलता जुलता है। इसकी बनावट में लकडी, तार, नरियल की करवंटी का उपयोग होता है। इसे हात से बजाया जाता है, या गज की सहायता से बजाया जाता है। किंगरी का उपयोग लोक कलाकार लोकगीत गाते समय करते है। किंगरी वाद्य परंपरा पिढी दर पिढी से चली आ रही है, लेकिन वर्तमान में बहुत कम युवा पिढी इसे सिखने और बाजाने में रुचि दीखा रही है। पोवाडा यह गीत प्रकार किंगरी वाद्य के साथ गाया जाता है इसमे वीर पुरुषो की शौर्य गाथा सुनाई जाती है।

7. नाल

यह खानदेशी लोकसंगीत का पारंपरिक और महत्त्वपूर्ण लोकवाद्य है। यह आकार में महाराष्ट्र की ढोलकी वाद्य जैसा ही होता है। “नाल का उपयोग विविध लोकसंगीत जैसे पोवाडा, गवळण, तमाशा, लावणी, भजन, वहिगायन इत्यादि में किया जाता है”।(सहस्त्रबुद्धे, 73). यह चर्म वाद्य है, जिसके एक भाग में शाई बाहर से लगाते है तो दुसरी भाग से मसाला अंदर से लगाया जाता है। हात से खुला बाज से यह वाद्य बाजाय जाता है।

8. सुंदरी (शहनाई)

खानदेश क्षेत्र में बाजाया जाने वाला प्रमुख लोकवाद्य है, जो की सुशिर वाद्य श्रेणी में आता है। यह वाद्य शहनाई का रूप है। खानदेश क्षेत्र के ग्रामीण भागों में लोकगीत, संबळ वादन के साथ विशिष्ठ त्योहार और सामाजिक उत्सव में बाजाय जाता है। सुंदरी वाद्य का स्वर मधुर, शांतिपूर्ण और मंगलमय होता है। वर्तमान काल में आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्ययंत्रो के कारण सुंदरी वादन का चलन धिरे धिरे घटता जा रहा है।

9. खंजिरा (दिमडी)

खंजीरा एक पारंपरिक वाद्य है, जिसे कुछ भागो में दिमडी भी कहा जाता है। छोटेसे गोलाकार लकडी के उपर चमडा मढाया जाता है। इस लोकवाद्य का उपयोग भारुड, पोवाडा, गवळण, भजन जागरण – गोंधळ, वहिगायन इत्यादि लोकसंगीत में किया जाता है।

प्राप्त तथ्य

1. लोकवाद्य परंपरा खानदेश में सामाजिक एकता का माध्यम है। विवाह, उस्तव, धार्मिक अनुष्ठान, त्योहार, सामाजिक कार्यक्रमो में वाद्य वादन का विशेष महत्त्व है।
2. खानदेश के लोकवाद्य धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्याक्रमो में प्रमुख भूमिका निभाते है।
3. वर्तमान समय में खानदेश कि लोकवाद्य परंपर पर आधुनिक संगीत का प्रभाव बढा है तथा युवा पिढी में पारंपारिक लोकवाद्यों के प्रती रुचि बढ़ना आवश्यक है।
4. इलेक्ट्रोनिक्स वाद्य और उपकरनो के बढ़ते प्रभाव से लोकसंगीत और लोकवाद्य परंपरा धीरे धीरे लुप्त हो रही है।
5. परंपरा का हस्तांनतरण बहुत सीमित रूप में हो रहा है।
6. डिजिटल माध्यम से प्रचार-प्रसार, सांस्कृतिक मोहत्सव का आयोजन, युवा कालाकारो कि भागीदारी, सरकारी सहायता इत्यादी में सकारात्मक बदल हो रहे है।

निष्कर्ष

महाराष्ट्र राज्य के खानदेश परिक्षेत्र की लोकवाद्य और लोकसंगीत परंपरा समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा है। यह परंपरा पिढी दर पिढी चली आ रही है और ग्रामीण जीवन के प्रत्येक महत्त्वपूर्ण अवसर जैसे धर्मिक अनुष्ठान, सामाजिक उत्सव, लोकगीत गायन, लोकवाद्य, पारंपरिक नृत्य, मेलो में जीवंत रूप से प्रस्तुत होती आ रही है। खानदेशी पारंपरिक लोकवाद्य तारपा, किंगरी, डफ, मंजिरा, संबळ, आदिवासी मादल (ढोल), सुंदरी, खंजिरा, नाल, धनगरी ढोल इत्यादि समाज के जीवन का अभिन्न अंग रहे है। खानदेशी लोकवाद्य न केवल संगीत वादन का माध्यम है, बल्की सामाजिक समरसता, धार्मिक श्रद्धा और सांस्कृतिक पहचान है। वर्तमान में आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्य और उपकरण जैसे डीजे, अकटयूपॅड, सिंथेसायजर, रीदम मशीन, रेकॉर्डिंग इत्यादि के वजह से पारंपरिक लोकवाद्य का प्रचलन धिरे धिरे कम होता जा रहा है। इसलीये लोक कलाकार आर्थिक समस्या से जुझ रहे है और अन्य व्यवसाय की और आकर्षित हो रहे है, इसके बावजूत कुछ संगीतकार व लोक कलाकार आज भी खानदेश की लोकवाद्य परंपरा को संरक्षित करने, नावाचार के माध्यम से पुनर्जीवित करने और नये स्वरूप में प्रस्तुत करने का कार्य कर रहे है, इससे युवा पिढी और समाज में खानदेशी लोकवाद्य और लोकसंगीत के प्रती रुचि बढी है। वर्तमान काल में वाद्ययंत्र बनावट में भी बादलाव हो रहे है। संबळ, ढोल, ताशे वाद्ययंत्रो में चमडे की जगह फायबर का उपयोग हो रहा है। लकड़ी के स्थान पर धातु के पात्रों/बर्तनों का उपयोग हो रहा है, यह बदलाव सकारात्मक है।

उपाय योजना

पारंपरिक लोकसंगीत और वाद्ययंत्रो का संरक्षण और संवर्धन करना चाहिये और समाज में जन रुचिवर्धन हेतु लोकसंगीत, लोकवाद्य कार्यशाला का आयोजन करना चाहिये। विद्यालय और महाविद्यालयो में लोकसंगीत और लोकवाद्य वादन का प्रशिक्षण देना चाहिये। लोक कलाकारो के लिये देनी जाने वाली शासकीय मानधन योजनाओ का प्रचार प्रासार होना चाहिये। खानदेश लोकसंगीत महोत्सव आयोजित कर लोकसंगीत और लोक वाद्यओ का प्रस्तुतिकरण होना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जगताप, विजय, लोककला उगम विकास, सध्यःस्थिति, इचलकरंजी, विजयश्री मुद्राणालय, 2019
2. पाटील, विलास, खानदेशाचा इतिहास, जलगाव, प्रशांत प्रकाशन, 2024
3. पावरा, के. ए, साततपुड्यातील आदिवासींचा सामाजिक व आर्थिक इतिहास, जलगाव, अथर्व प्रकाशन, 2024
4. बावीस्कर, देवीलाल, खानदेश चा लोकनाट्य तमाशा, जलगाव, अथर्व प्रकाशन, 2023
5. म्हसकर, संगीता, खानदेशाची सांगीतिक वाटचाल, जलगाव, अथर्व प्रकाशन, 2015
6. रानडे, अशोक, लोकसंगीत शास्त्र, मुंबई, अशोक दा. मेमोरियल ट्रस्ट, 1975
7. रोटावदकर, शकुंतला, खानदेशातील लोकोत्सव गौराई, जलगाव, कुमुद प्रकाशन, 2021
8. रोटावदकर, शकुंतला, खानदेशातील लोकोत्सव कानबाई, जलगाव, कुमुद प्रकाशन, 2021
9. शहा, मू. ब, खानदेशाचा सांस्कृतिक इतिहास, जलगाव, अथर्व प्रकाशन, 2015
10. सहस्त्रबुद्धे, आनिल, लोककला संकल्पना आणि स्वरूप, पुणे, पदमागंधा प्रकाशन, 2020